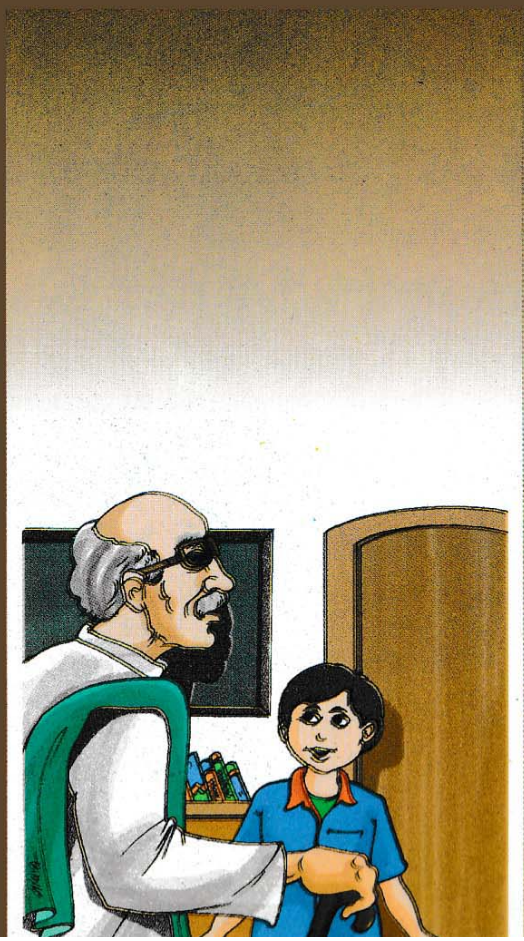
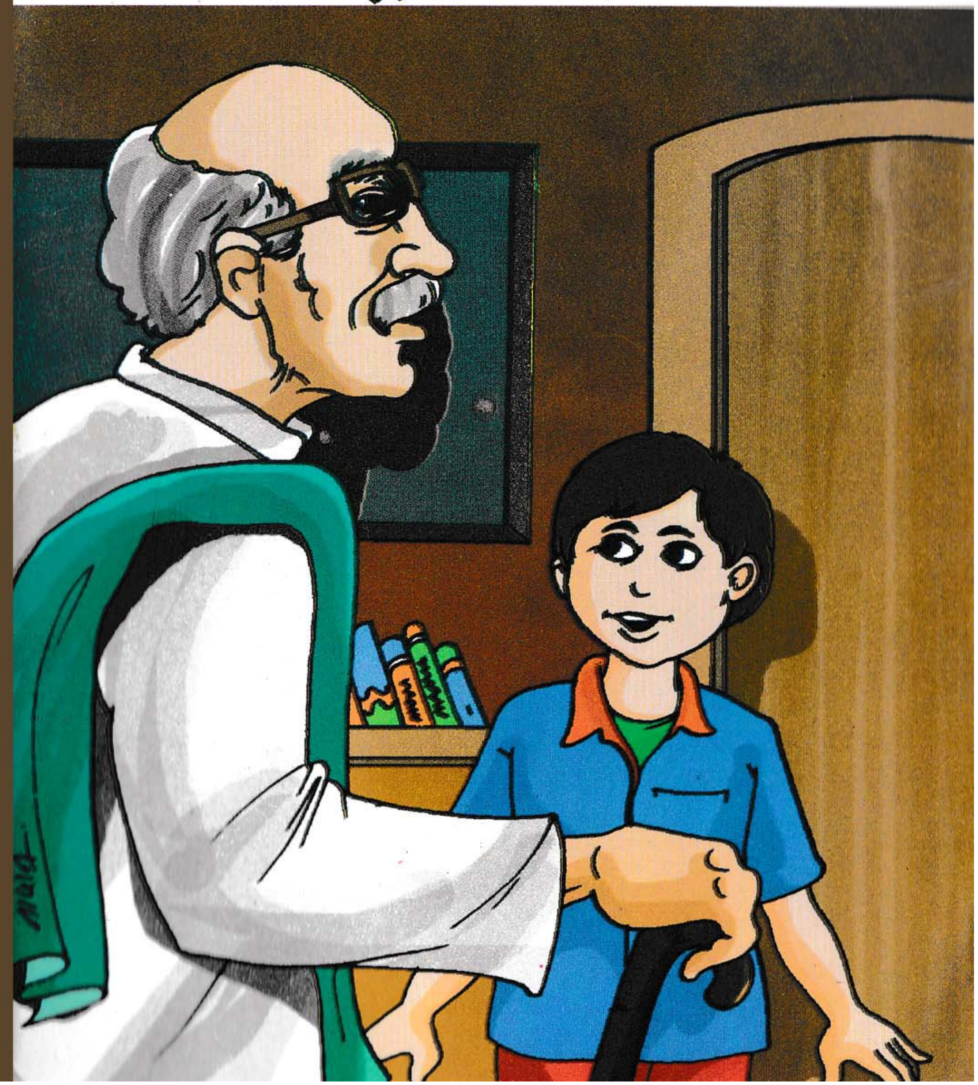


मास्टरजी

रवीन्द्रनाथ टैगोर





मास्टर जी

(छात्र का नाम है मधुसूदन। उसे मथुरानन्द मास्टर ट्यूशन पढ़ा रहे हैं। कमरे में मधुसूदन के पिता अजय बाबू का प्रवेश)

अजयबाबू : कहिए मथुरानन्द बाबू, मधुसूदन की पढ़ाई कैसी चल रही है?

मथुरानन्द : मधुसूदन शरारती तो बहुत है, पर पढ़ाई-लिखाई में काफी तेज है। कोई बात बार-बार बतानी नहीं पड़ती। बस एक बार पढ़ा हो, वह भूलता नहीं।

अजयबाबू : अच्छा! तो मैं भी जरा देखूँ कि वह कितना होशियार है?

मथुरानन्द : देखिए! खुशी से देखिए।

मधुसूदन : *(मन-ही- मन में)* कल मास्टर जी ने वह धुनाई की थी कि हड्डियाँ आज भी दुख रही हैं। आज लेता हूँ बदला। इनकी भी छुट्टी न करवा दी तो मेरा भी नाम नहीं।

अजयबाबू : क्यों मधु, याद है सब?

मधुसूदन : जो कुछ मास्टर जी ने पढ़ाया, सब याद है।

अजयबाबू : अच्छा, तो बता कि उद्भिद किसे कहते हैं?

मधुसूदन : जो उगे, यानी मिट्टी को फोड़ कर जो उसमें से ऊपर निकले।

अजयबाबू : कोई उदाहरण इसका?

मधुसूदन : केंचुआ।

मथुरानन्द : *(गुस्से में आँखें तरेर कर)* क्यों रे, क्या कहा?

अजयबाबू : जरा ठहरिए मास्टर जी, अभी आप कुछ न बोलिए। *(मधुसूदन से)* तुमने कविता



पढ़ी है। यह बताओ कि वन में क्या खिलता है?

मधुसूदन : काँटा।

(मथुरानन्द बेंत उठाते हैं) क्यों गुरुजी, मारते क्यों हैं? मैं कोई झूठ कहता हूँ?

अजयबाबू : अच्छा, सिराजुद्दौला को किसने मिटाया? इतिहास क्या कहता है?

मधुसूदन : कीड़ों ने। *(मथुरानन्द दो-तीन बेंत मारते हैं)* जी, खामख्वाह मार खानी पड़ती है।

सिर्फ सिराजुद्दौला को ही क्यों, सारे इतिहास को ही कीड़े चाट गए हैं। यह देखिए। *(पुस्तक दिखाता है। मथुरानन्द मास्टर सिर खुजाते हैं।)*

अजयबाबू : व्याकरण याद है?

मधुसूदन : जी, है।

अजयबाबू : 'कर्ता' क्या है? जरा उदाहरण के साथ समझाओ तो।

मधुसूदन : जी, कर्ता तो उस टोले के जयलाल मुंशी हैं।

अजयबाबू : क्यों, कैसे?

मधुसूदन : वह हमेशा क्रिया-कर्म को ही लिये रहते हैं।

मथुरानन्द : *(गुस्से में)* तुम्हारा सिर। *(पीठ पर बेंत जमाते हैं)*

मधुसूदन : जी सर नहीं, वह तो पीठ है।

मथुरानन्द : षष्ठी-तत्पुरुष किसे कहते हैं?

मधुसूदन : पता नहीं। *(मथुरानन्द बेंत दिखा कर धमकाते हैं)* इसको तो अच्छी तरह जानता हूँ—यह है यष्टि तत्पुरुष। *(अजयबाबू*



का हँसना और मथुरानन्द का कुढ़ रह जाना)

अजयबाबू : अंकगणित सीखा है?

मधुसूदन : जी, हाँ।

अजयबाबू : अच्छा, अगर तुम्हें साढ़े छह पेड़े दे यह कहा जाए कि पाँच मिनट तक खाने के बाद जो पेड़े बचें उन्हें तुम अ छोटे भाई को दे दो। एक पेड़ा खा

तुम्हें दो मिनट लगते हैं। बताओ, तुम अपने भाई को कितने पेड़े दोगे?

ुसूदन : एक भी नहीं।

रानन्द : वह क्यों?

ुसूदन : सब खा डालूँगा। एक भी नहीं दे पाऊँगा।

यबाबू : अच्छा, बड़ का एक पेड़ रोज एक सेंटीमीटर बढ़ता है। इस मई की पहली तारीख को वह एक मीटर का था, तो अगले साल की पहली तारीख को वह कितना ऊँचा होगा?

ुसूदन : पेड़ टेढ़ा हो जाए तब तो कहना मुश्किल है; हाँ, अगर सीधे ऊपर की ओर बढ़ता रहा तो नाप कर देखने पर उसकी ऊँचाई का पक्का पता लग सकेगा; और अगर इसी बीच सूख गया, तब तो कोई बात ही नहीं।

रानन्द : मार खाए बिना तुम्हारी अक्ल के दरवाजे नहीं खुलते। कमबख्त, मार-मार कर कमर टेढ़ी कर दूँगा।

यबाबू : मथुरानन्द बाबू, यह आपका वहम है।

मार-पीट से शायद ही कोई काम बन पाता है। कहा है कि गधे को पीट कर घोड़ा नहीं बनाया जा सकता, पर अक्सर घोड़ा पिटते-पिटते गधा हो जाता है। आप अपने बेंत समेत यहाँ से तशरीफ ले जाएँ। कुछ दिन मधुसूदन की पीठ सुस्ता ले तो मैं खुद ही इसे पढ़ाऊँगा।

मधुसूदन : *(मन-ही-मन)* आह, जान बची।

मथुरानन्द : जान बची साहब। इस लड़के को पढ़ाना मजदूर का काम है; सोलहों आने मैनुअल लेबर। तीस दिन एक लड़के को पीट कर मुझे सिर्फ पाँच रुपए मिलते हैं; उतनी ही मेहनत से कहीं छत-वत पीटूँ तो कम-से-कम दस रुपए तो मिल जाएँगे।

•••••

बिरछा बाबा की खोज

ऊधो : क्यों गोबरा, कुछ पता चला क्या?

गोबरा : ना आहं, तुम्हारी बात पर महीने भर से वन-वन मारा-मारा फिर रहा हूँ। चक्कर



काटते-काटते शरीर भी आधा रह गया, पर उसकी चुटिया भी दिखाई नहीं पड़ी।

पाँचू : किसका पता लगा रहा है गोबरा?

गोबरा : बिरछा बाबा का।

पाँचू : बिरछा बाबा? यह कौन-सा बाबा है रे?

ऊधो : तू नहीं जानता? उन्हें तो सारी दुनिया जानती है।

पाँचू : अच्छा? बिरछा बाबा का यह मामला है क्या भला?

ऊधो : बाबा जिस पेड़ पर चढ़ कर बैठ जाते हैं, वही कल्पवृक्ष हो उठता है। उसके तले खड़े हो कर हाथ फैलाते ही मुँह-माँगी मुराद मिल जाती है।

पाँचू : यह सब तुझे किसने बताया?

ऊधो : गूदड़ गाँव के भेकू ने। बाबा उस दिन गूलर के पेड़ पर बैठे पैर हिला रहे थे। भेकू को इसका पता नहीं था। वह उसी पेड़ के नीचे हो कर कहीं जा रहा था। उसके सिर पर हाँड़ी में शीरा भरा था। भेकू हुक्के का तम्बाकू बनाने के लिए शीरा लिए जा रहा

था। बाबा के पैर की ठोकर से हाँड़ी उलट कर नीचे गिर पड़ी। शीरे से उसके मुँह, नाक, आँख आदि सब मुँद गए। बाबा दया के सागर हैं। बोले, "भेकू, खुल कर बता कि तेरे मन की कामना क्या है?" भेकू बुद्धू का बुद्धू ही निकला। बोला : "बाबा, एक लत्ता दे दो, मुँह पोंछ डालूँ।" इतना कहना था कि पेड़ से एक अँगोछा नीचे गिरा। मुँह-आँख पोंछ कर भेकू ऊपर देखता है तो वहाँ कहीं कोई नहीं। बात यह है कि बाबा से कोई एक ही कामना की जा सकती है। बस, एक कामना कर लेने के बाद रोते-रोते आसमान भी फाड़ डालो तो भी कोई सुनवाई नहीं होगी।

पाँचू : हाय रे हाय, शाल न दुशाला, माँगा भी तो क्या माँगा—एक अँगोछा। हाँ, भेकू की सूझ-बूझ हो ही कितनी सकती थी भला?

पाँचू : अच्छा भाई ऊधो, अँगोछे को तूने देखा है?

ऊधो : देखा क्यों नहीं है? हदूगंज की खड्डी का डेढ़गजी टुकड़ा। चम्पई जमीन, लाल किनारी। हू-ब-हू वही चीज।

पाँचू : क्या कहता है तू? खैर, पेड़ के ऊपर से कैसे गिरा?

ऊधो : यही तो मजे की बात है। सब बाबा की दया।

पाँचू : चल भाई, चल। बाबा को ढूँढा जाए। पर पहचानेंगे कैसे?

ऊधो : यही तो मुश्किल है। देखा तो उन्हें किसी ने भी नहीं। एक को मौका भी मिला तो लो, भेकू बेटे की आँखें ही शीरे से मुँद गईं।

पाँचू : फिर उपाय क्या है?

ऊधो : मुझे तो कहीं भी कोई मिलता है तो हाथ जोड़ कर पूछ बैठता हूँ, 'कृपा करके यह बताइए कि बिरछा बाबा आप ही तो नहीं हैं?' सुनते ही लोग मारने को दौड़ पड़ते हैं। एक ने तो मेरे सिर पर हुक्के का पानी डाल दिया।

गोबरा : डालें। पर हम भी पिण्ड नहीं छोड़ने के। ढूँढ के ही मानेंगे। कौन जाने, नसीब में क्या लिखा हो।

पाँचू : भेकू कहता है कि पेड़ पर चढ़े बाबा को ही पहचाना जा सकता है। जब पेड़ से नीचे होते हैं, तब तो उन्हें पहचानना बहुत मुश्किल है।

ऊधो : पेड़ों पर चढ़-चढ़ कर कहाँ तक ढूँढते फिरेंगे। मैंने एक रास्ता निकाला है। मेरे पेड़ पर आम लदे हैं। जिसे देखता हूँ, उसी से कहता हूँ—'बाबा, आम तोड़ कर लेते जाओ।' पेड़ लगभग सूना हो चला। डाल भी खूब टूटी हैं।

पाँचू : अब देर करना ठीक नहीं। चलो चलें। नसीब का जोर होगा तो दर्शन होंगे ही। एक बार पूरा जोर लगा कर पुकारना भाई। बिरछा बाबा, हे बाबा, दयालु बाबा, वन में कहीं छिपे हो तो एक बार हम अभागों को दर्शन तो दो।

गोबरा : अरे, दया हो गई रे! हो गई शायद!

पाँचू : कहाँ रे, कहाँ?

गोबरा : वह देख, हर्फ-रेवड़ी के पेड़ पर!

पाँचू : क्या रे? क्या है हर्फ-रेवड़ी पर? मुझे तो कुछ

भी दिखाई नहीं पड़ता।

गोबरा : वह देख न, वह क्या झूल रहा है?

पाँचू : क्या झूल रहा है? वह तो पूँछ है रे।

ऊधो : तुम्हारी अक्ल को क्या हुआ गोबरा? वह बाबा की नहीं, हनुमान की दुम है रे। देखता नहीं, मुँह बिचका रहा है!

गोबरा : घोर कलियुग है, यह क्यों भूलते हो? बाबा ने ही हमें भुलावा देने के लिए बन्दर का रूप धारण किया है।

पाँचू : भुलावा नहीं दे सकते बाबा। काला मुँह दिखा कर हमें भुलावा नहीं दे सकते तुम। जी भर बिचका लो मुँह, हम तो टलने के नहीं। अब तो तुम्हारी इस श्री-पूँछ की शरण हैं।

गोबरा : अरे-रे-रे, बाबा तो लम्बी छलांग लगा कर भागने लगे।

पाँचू : भाग के जाएँगे कहाँ? हमारी भक्ति की दौड़ से पार कैसे पाएँगे?

गोबरा : वह बैठे, कैंथ की फुनगी पर।

ऊधो : पाँचू, चढ़ जा ना कैंथ पर।

पाँचू : अरे, तू ही चढ़ना।

ऊधो : अरे, तू चढ़।

पाँचू : इतने ऊँचे पर हम नहीं चढ़ सकते बाबा, कृपा करके उतर आओ।

ऊधो : बाबा, यही असीस दो कि तुम्हारी उस श्री-पूँछ को गले में लपेट कर अन्त-घड़ी आँखें मूँदूँ।

नितिन : पूपू, अगर तुम्हें बिरछा बाबा मिल जाते, तो तुम क्या माँगतीं?

पूपू : भैया, मैं तो ऐसी कलम माँगती, जिससे लिखने पर गणित के सवालों में कभी भूल न हो।

नितिन : अरी पगली! ऊधो, पाँचू और गोबरा जैसे लोग कम बुद्धि कहलाते हैं। कभी भी बिना सोचे-समझे हर बात पर विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। गणित के सवालों में कभी गलती न हो, इसके लिए कड़ी मेहनत की जरूरत होती है। भगवान भी सिर्फ मेहनती बच्चों की ही मदद करते हैं।

•••••